Shortage of T.B. Hospitals

4295. SHRI K. LAKKAPPA:
SHRI H. N. GOWDA:
SHRI D. N. PUTTE GOWDA:

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether there is shortage of T.B. hospitals in the country to treat the patients; and

(b) if so, the action proposed by Government to construct more hospitals for T.B. cure?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (SHRI NIHAR RANJAN LASKAR): (a) The existing number of T.B. Hospitals in the country are considered fairly satisfactory to meet the present needs. Under the National T.B. Control Programme stress is laid on domiciliary treatment of T.B. patients.

(b) The scheme of establishment of more T.B. hospitals where necessary has been included under the State Plan Sector during the Sixth Plan Period (1980—85).

Different Rates of Freight

4296. SHRIMATI USHA PRAKASH CHOUDHARI: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether different rates of freight obtain in the Railways for carrying fruit baskets of seedlings;

(b) the reasons for introducing different rates for their transport; and

(c) whether it is proposed to do away with different rates of freight and introduce uniform freight charges for the above two varities of commodities

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS AND IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MALLIKARJUN): (a) Yes.

(b) Seedlings are not comparable with fruits. Whereas the seedlings are used for agricultural purposes the fruits are for consumption as food.

(c) No.

कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति

2497. श्रीमती ऊषा प्रकाश चौधरी : क्या स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में कुष्ठ रोग से कितने व्यक्ति पीड़ित हैं ;

(ख) गत एक दशाब्दिक के दौरान उनकी संख्या में कमी आई है अथवा वृद्धि हुई है ;

(ग) राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत कुष्ठ रोगियों को राहत देने के लिए क्या-क्या कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं ;

(घ) क्या कुष्ठ रोगियों का उपचार करने के अतिरिक्त उन्हें अपना जीवन उपयोगी बनाने और उनका पुनर्वास करने से सम्बन्धित भी कोई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं; और

(ङ) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री नीहार रंजन लस्कर) : (क) 1971 में कुष्ठ रोग से पीड़ित रोगियों की अनुमानित संख्या 32 लाख थी।

(ख) इन रोगियों की संख्या में कुछ वृद्धि हुई है क्योंकि जिन क्षेत्रों में यह कार्यक्रम नहीं चलाया गया था उन क्षेत्रों में इस कार्यक्रम का विस्तार करने से और अधिक रोगियों का पता चला है।

(ग) कुष्ठ रोगियों की राहत के लिए छठी पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय कुष्ठ रोग नियंत्रण कार्यक्रम की मुख्य बातें अनुबंध 1 में दी गई हैं ।

(घ) और (ङ) राष्ट्रीय कुष्ठरोग नियंत्रण कार्यक्रम में केवल मेडिकोसर्जिकल पहलुओं के लिए व्यवस्था की गई है न कि संमाजार्थिक पहलुओं के लिए समाज कल्याण मंत्रालय कुष्ठ से मुक्त रोगियो के पुनर्वास के लिए एक नई योजना तैयार कर रहा है जिसके ब्यौरों को अभी अंतिम रूप नहीं दिया गया है ।

विवरण

भारत सरकार ने राज्य सरकारों के सहयोग से कुष्ठ रोग को फैलने से रोकने और कुष्ठ रोगियो को उपचार की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करने के लिए सन् 1955 में राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम चलाया था। इसके प्रारम्भ से 1968–69 तक यह कार्यक्रम केन्द्रीय सहायता प्राप्त कार्यक्रम रहा और 1969–70 से 1978–79 तक इसे शत प्रतिशत केन्द्रीय प्रायोजित कार्यक्रम के रूप में चलाया गया । 1979–80 से यह कार्यक्रम केन्द्रीय प्रायोजित कार्यक्रम के रूप में चलाया जा रहा है लेकिन केन्द्र और राज्यों के बीच इसका खर्च 50 : 50 के आधार पर वहन किया जाता है । वर्ष 1981–82 सेयह योजना शतप्रतिशत केन्द्रीय प्रायोजित योजना के रूप चलाई जाएगी ।

इस रोग को फैलने से रोकने के लिए घर घर जा कर सर्वेक्षण कर रोगियों का पता लगाया जाता है और इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुष्ठ नियंत्रण यूनिटो, सर्वेक्षण शिक्षा तथा उपचार केन्द्रों, पुनः रचनाकारी शल्यचिकित्सा यूनिटों को स्थापित कर खोले गए बाह्य क्लिनिकों में तथा आन्तरिक पलंगों पर उनका इलाज किया जाता है ।

राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम की निगरानी के अन्तर्गत अब तक अधिक और अत्याधिक स्थानिकमारी वाले इलाको की लगभग 32 करोड़ 50 लाख आबादी को कवर कर लिया गया है । और लगभग 26 लाख रोगियो का पता लगाया गया है और 22 लाख रोगियो का उपचार किया गया है । 1976–77 से लगभग 60 हजार कुष्ठ रोगियो की छुट्टी दी जा चुकी है जिनमें रोग मुक्त और मृत रोगियों की संख्या भी शामिल है । बाहरी रोगियों का उपचार उपलब्ध करने के लिए 381 कुष्ठ नियंत्रण यूनिट, 6595 सर्वेक्षण, शिक्षा तथा उपचार केन्द्र और 430 नगरीय कुष्ठ रोग केन्द्र खोले जा चुके हैं । कुष्ठ रोग के गम्भीर और जटिल रोगियों को अस्पताल में भर्ती कर इलाज करने के लिए 199 अस्थाई वार्ड खोल दिए गये हैं । कुष्ठ रोगियों के नाक, हाथ या पैर की विकृतियों को ठीक करने के लिए 71 पुनः रचनाकारी शल्य चिकित्सा यूनिट कार्य कर रहे है । कुष्ठ के कार्णिकों के प्रशिक्षण के लिए 42 सरकारी और स्वैच्छिक कुष्ठ प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए हैं जिनमें दो केन्द्रीय और दो क्षेत्रीय संस्थान शामिल हैं, बेहतर सर्वेक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन के लिए 107 जिला/क्षेत्रीय कुष्ठ अधिकारी यूनिट और 753 परा-चिकित्सा सुपरवाइजर यनिट खोले गए हैं ।

डी0 डी0 एस0 गोलियां जो अब तक एक मुख्य कुष्ठ रोगी दवाई के रूप में उपयोग की जाती रही हैं, अब लगभग 10 प्रतिशत संक्रामक रोगियो पर अप्रभावकारी रही है जो अधिक अवधि तक पाजीटिव रोगी बने रहे। जब रोगियों को रिफेम्पीसिन कुछ दिनों के लिए भी दी गई तो यह

कुष्ठ रोगों के जीवाणुओं को नाश करने में सफल रही। जिन रोगियों पर डी० डी० एस० प्रभाव नहीं करती या उन पर इसकी प्रतिक्रिया होती है तो उन मामलों में लम्परीन प्रभावकारी पाई गई है। जिन संक्रामक रोगियो पर दवाई का प्रभाव नहीं पड़ता उनकी प्रतिशतता कम करने के लिए रोगी को आमतौर पर डी० डी० एस० के साथ आई० एन० एच० और थियासेटाजोन मिला कर देने की वकालत की गई है।

इसलिए इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शुरू में कुछ जिलों में संक्रामक, जटिल और डी०डी०एस०—रोधी अथवा प्रतिक्रिया वाले रोगियों के लिए वर्तमान मोनो-ड्रग थेरेपी के स्थान पर इन नई औषधियों का उपयोग करते हुए मल्टीड्रग थेरापी को मार्गदर्शी आधार पर शुरू किया जाएगा और यदि यह सफल हो गया तो इसे देश के अन्य स्थानिकमारी वाले जिलों में इस का उपयोग किया जाएगा ताकि इस रोग के प्रसार को बहुत हद तक रोका जा सके, और इस रोग से पीड़ित होने वाले नए लोगों की संख्या को काफी सीमा तक कम किया जा सके।

छठी पंचवर्षीय योजना के उद्देश्य

छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त अर्थात् मार्च, 1985 तक यह परिकल्पना की गई है कि :—

(क) सक्रिय रोगियों पर इस रोग की प्रभावकारिता 50 प्रतिशत कम हो जाएगी।

(ख) पूर्णरूप से सक्रिय रोगियों में संक्रामक रोगियों की संख्या 20–25 प्रतिशत से घटकर इस से आधी हो जाएगी।

(ग) सक्रिय रोगियों की विकृति पर 20–25 प्रतिशत से घट कर इसकी आधी रह जाएगी।

(घ) विकृति वाले ठीक किए जा सकने वाले रोगियों में से आधे ठीक किए जाएंगे।

(ङ) सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े हुए रोगियों में से 50 प्रतिशत रोगियों को पुनर्स्थापना के लिए तैयार किया जाएगा।

इसके अलावा यदि रोगियों में मल्टी-ड्रग थेरापी सफल हो जाती है और छठी योजना अवधि के दौरान कुष्ठ रोग की वक्सीन तैयार हो तो जाती है तो 2000 इसवी तक देश में कुष्ठ रोग के उन्मूलन के उद्देश्य की ओर बढ़ना सम्भव हो जाएगा।

छठी योजना की नीति

उद्देश्य प्राप्त करने के लिए छठी योजना के दौरान राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम इस प्रकार किया जाएगा :—

1. कुष्ठ रोगियों का आरम्भ में पता लगाना और उनका नियमित उपचार करना।

2. सभी क्षेत्रों की छानबीन करना ताकि कोई कुष्ठ रोगी ऐसा न रहे जिसका पता न लगाया गया हो, उसका उपचार न किया गया हो और कैमोप्राफीलेक्सिस के द्वारा अधिक से अधिक बच्चों को संक्रामक कुष्ठ रोगियों के सम्पर्क से बचाना।

3. सभी असंक्रामक रोगियों के इलाज के लिए आम दवाई डी० डी० एस० होगी। रोगी यह दवाई अपनी हजम करने की शक्ति के अनुसार ले सकता है।

4. सभी संक्रामक रोगियों के लिए डी० डी० एस० सहित मोनो-ड्रग

थेरापी की बजाए रिफेम्पीसिन, लेप्प्रीन, डी० डी० एस० आई० एन० एच० थियासिटाजोन का मिश्रण पर्याप्त मात्रा में देना आरम्भ किया जाएगा ताकि रोगी का संक्रमण तत्काल पर्याप्त मात्रा में कम हो जाए ताकि लोगों में इसे रोग के संक्रामण को रोका जा सके। इसके लिए आरम्भ में विभिन्न राज्यों के अति-स्थानिक मारी वाले 15 जिलों में इन दवाइयों के मिश्रण के मार्गदर्शी क्षेत्रीय परीक्षण किये जाएंगे।

5. कुष्ठ रोग के प्रशिक्षण कार्य को बढ़ाया जाएगा और यह प्रशिक्षण और अधिक क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं रेफरल संस्थान स्थापित कर उनमें कार्यशालाएं आयोजित कर और छात्रवृत्तियां देकर सफरी सर्जनों के जरिए प्रदान किया जाएगा ताकि कार्य की क्वालिटी में सुधार लाया जा सके और एकीकरण के लिए क्षेत्र तैयार किया जा सके। छात्रवृत्तियां बढ़ी हुई दरों पर दी जाएंगी और अपेक्षित गुणवत्ता के लिए नए पाठ्यक्रम भी आरम्भ किए जाएंगे।

6. कुष्ठ रोगियों के पुनर्वास का मेडिको सर्जिकल पहलू आरम्भ करने के साथ साथ उनकी पुनः रचनाकारी शल्य चिकित्सा भौतिक चिकित्सा की जाएगी, संरक्षात्मक जूते दिए जाएंगे, व्यावसायिक चिकित्सा उपलब्ध की जाएगी, कार्य तथा औजार दिए जाएंगे और नौकरियां दिलाई जाएंगी। ऐसी 15 पुनर्वास संवर्धन यूनिटें खोली जाएंगी और उन्हें वर्तमान कुष्ठ गृह अस्पताल अथवा कालोनी से सम्बद्ध किया जाएगा ताकि रोगियों की पुनर्वास सम्बन्धी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु पुनर्वास के लिए अधिक केन्द्र खोले जा सकें।

7. मार्गदर्शी परियोजना क्षेत्रों, माडल कुष्ठ नियंत्रण क्षेत्रों तथा रेफरल एवं पुनर्वास केन्द्रों में वैज्ञानिक ज्ञान तथा तकनीकों के प्रायोगिक पहलूओं के बारे में क्षेत्रीय अनुसंधान किए जाएंगे। इस रोग का और अधिक जोरदार ढंग से मुकाबला करने के लिए कुष्ठ रोग की वैक्सीन का आविष्कार करने हेतु अनुसंधान कार्यों पर विशेष जोर दिया जाएगा।

8. नमूना सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन एकक खोले जाएंगे जिन का काम आंकड़ों में तैयार किए गये नमूना सर्वेक्षणों के जरिए ऐसे इलाकों में जिनमें कुष्ठ कार्यक्रम नहीं चलाये जा रहे हैं, कुष्ठ रोग की समस्या कुष्ठ कार्य में लगी संस्थाओं के कार्यों को तथा कार्यक्रम वाले स्थानों पर इस रोग के रुख का पता लगाना होगा और वर्तमान विधियों में संशोधन करने के लिए इस रोग की व्यापकता के आंकड़े प्राप्त करने होंगे।

9. महामारी विज्ञान सम्बन्धी दलों का गठन कर अति स्थानिकमारी वाले क्षेत्रों में इस कार्य को संघठित और तेज किया जाएगा तथा पहले से स्थापित यूनिटों और केन्द्रों

का, कर्मचारियों तथा सामान की व्यवस्था करने के बाद दवा बढ़ा कर सुपरवीजन और मार्ग-दर्शन दिया जाएगा ।

10. बहुऔषधीय उपचार तथा शल्य चिकित्सा की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा नये बार्ड बना कर तथा स्वैच्छिक संगठनों को बराबर का कैपिटेशन अनुदान देते हुए उनके पास उपलब्ध अतिरिक्त स्थान का उपयोग कर कुष्ठ रोगियों के लिए अतिरिक्त पलंग तैयार किए जाएंगे ।

11. इस कार्यक्रम की जरूरतों में हुई वृद्धि को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की स्वैच्छिक संस्थाओं तथा द्विपक्षीय एजेन्सियों को इस काम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा ।

12. इस रोग के साथ जुड़े हुए सामाजिक कलंक तथा बहिष्कार को दूर करने तथा इस रोग से सम्बन्धित वैज्ञानिक जानकारी का प्रचार करने के लिए स्वास्थ्य शिक्षा पर बल दिया जाएगा तथा उसे तेज किया जाएगा ताकि कुष्ठ रोगियों का शीघ्र पता लगाया जा सके, इन रोगियों को इनके परिवारों से अलग करने से रोका जा सके, उपचार की नियमितता में सहायता की जा सके और उन्हें फिर से बसाया जा सके । कुष्ठ रोग पर पैम्फलैट्स, पोस्टर तथा पुस्तिकाएं छाप कर तथा स्लाइडें तथा चलचित्र तैयार कर कुष्ठ रोग सम्बन्धी कार्य के प्रचार को प्रोत्साहित किया जाएगा ।

13. कुष्ठ रोगियों के उपचार के लिए नेमी औषधि—डी० डी० एस० गोलियां समस्त पंजीकृत सरकारी अथवा स्वैच्छिक संगठनों तथा पंजीकृत चिकित्सकों को कुष्ठ रोगियों के मुफ्त इलाज के लिए सप्लाई की जाती रहेंगी ।

14. कुष्ठ नियन्त्रण यूनिटों तथा कुष्ठ प्रशिक्षण केन्द्रों के लिए सीमित संख्या में जरूरी भवन ग्रामीण विशेष कर पहाड़ी, आदिवासी तथा पिछड़े इलाकों में बनाए जाएंगे क्योंकि वहां इनके लिए किराये पर स्थान नहीं मिलते ।

15. केन्द्रीय स्वास्थ्य परिषद् के सुझाव पर स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली ने कुष्ठ रोग को धीरे-धीरे सामान्य स्वास्थ्य सेवा के साथ जोड़ने का निश्चय किया है । लेकिन इनके एकीकृत करने से पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि कुष्ठ रोगी उपचार करवाना बन्द न करदें और उन्हें जनरल अस्पतालों तथा स्वास्थ्य केन्द्रों में निदान और उपचार कराने के लिए स्वीकार किया जाए ऐसे एकीकरण का वस्तुतः कार्य आरम्भ हो उससे पहले इस बात को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा तथा पराचिकित्सा कार्मिकों के लिए कुष्ठ रोग के कार्य में विस्तृत प्रशिक्षण देने और रुख में परिवर्तन लाने की जरूरत होगी । एकीकरण की यह प्रक्रिया बहुत

धीरे धीरे की जानी चाहिए और इस कारण से कुष्ठ नियंत्रण कार्य को कोई क्षति पहुंचे यह सुनिश्चित करने के बाद ही इसे सब से पहले कम स्थानिकमारी वाले जिलों में, फिर मध्यम स्थानिकमारी वाले जिलों मे और अन्त में अधिक स्थानिकमारी वाले जिलों में किया जाए ।

16. यह कार्यक्रम मुख्यतः राज्य तथा संघ क्षेत्र सरकारों के जरिए और कुछेक स्थानों में स्वशासी और निगमित निकायों तथा स्वैच्छिक संगठनों द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा । केन्द्रीय सरकार विशेषरूप से क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं रेफरल संस्थान स्थापित करने, कुष्ठ नियंत्रण कार्य को तेज करने के लिए मार्गदर्शी परियोजना चलाने, मरकविज्ञान सम्बन्धी निगरानी दल गठित करने और कुछेक कुष्ठ रोग पुनर्वास संवर्धन यूनिटें तथा नमूना सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन यूनिटें स्थापित करने का काम करेंगी ।

स्वेच्छा से नसबन्दी कराने वाले सरकारी कर्मचारियों को विशेष सुविधायें

4298. **श्री दया राम शाक्य :** क्या स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने उन सभी केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों को विशेष सुविधायें देने की घोषणा की है जो स्वेच्छा से परिवार नियोजन करेंगे तथा अपनी नसबन्दी करायेंगे ; और

(ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री निहार रंजन लास्कर) : (क) और (ख). इस विषय पर लोक सभा में 31 जनवरी, 1980 को पूछे गये तारांकित प्रश्न संख्या 59-क के उत्तर में जारी किए गए दोनों आदेशों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रख दी गई थी । इन दोनों आदेशों की एक-एक प्रति सभा पटल पर पुनः रख दी गई है । [ग्रन्थालय में रखी गई । दखिए संख्या एल-टी-2135/81]

Railway Employees' Cooperative Banking Society Union, Jodhpur

4299. **SHRI DAYA RAM SHAKYA:** Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether any representation from the Railway Employees Cooperative Banking Society Union, Jodhpur has been received regarding granting of post retirement passes to the employees of the Railway Employees' Cooperative Banking/Credit Societies; and

(b) if so, the action being taken on the representation?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS AND IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MALLIKARJUN): (a) Yes.

(b) The employees of Railwaymen's Co-operative Societies/Banks are permitted privilege passes on a restricted scale, only as a special gesture as long as they are in service. These men are not on par with regular Railway employees. Post-retirement complimentary passes are granted to regular employees of the Railways, and it is not considered